bihar museum
बिहार संग्रहालय

पुनरावलोकन

अवलोकन

प्रकाशक
बिहार संग्रहालय
नेहरू पथ, पटना-800001
www.biharmuseum.org

लेखक
अनीश अंकुर

डिजाइन
सूरज सावंत
डिजाइनर, बिहार संग्रहालय, पटना

फोटोग्राफर
रंजीत कुमार
फोटोग्राफर, बिहार संग्रहालय, पटना

₹1000

ISBN - 978-81-976901-0-5

प्रिंटर
संजय प्रिंटिंग वर्क्स, गुरहट्टा, पटना सिटी, पटना-8

आलेखों
की सूची

नरेन्द्रपाल सिंह : लोकजीवन की नयनाभिराम छवि दर्शाने वाला चित्रकार	1-10
सचिन्द्र नाथ झा : धार्मिक व मिथकीय बिम्बों से मोहाविष्ट सृजन संसार	11-18
आनंदी प्रसाद बादल : सौम्य अनुभूति वाली चित्र प्रदर्शनी	19-26
त्रिभुवन देव : पहाड़ों व प्रकृति में छिपे सौंदर्य को उद्‌घाटित करने वाला चित्रकार	27-36
शैलेन्द्र कुमार : सामान्य जीवन के सौंदर्य को उद्‌घाटित करने वाला छायाकार	37-48
बीरेश्वर भट्टाचार्या : अनुभव संसार को समृद्ध करने वाली चित्र प्रदर्शनी	49-58
अनिल बिहारी : नए जमाने की स्त्रियों के चितेरे	59-66
श्याम शर्मा : हमारी चाक्षुष दुनिया का विस्तार करती प्रदर्शनी	67-74
रजत घोष : बिहार के कला जगत में एक परिघटना का नाम	75-84
संजय कुमार : बुद्ध के जीवन में शांति व रौशनी की तलाश	85-94
जतिन दास : गतिमान रेखाओं से मनोदशाओं का अंकन	95-104
हर महिला कुछ खास : लोककला और समकालीन कला की प्रदर्शनी	105-116
टुगेदर वी आर्ट : जी – 20 देशों की कलाकृतियों की प्रदर्शनी	117-132
नेपाल : जहाँ देवताओं का निवास है	133-142
अंतर्राष्ट्रीय प्रिंट मेकिंग प्रदर्शनी : छापाकला की अंतर्राष्ट्रीय प्रदर्शनी	143-156
ब्रह्मदेव पंडित : क्ले टू ब्यूटी	157-168
सीमा कोहली : बिटविन रियलम्स एंड ड्रीम्स : एलाँग रियलिटी	169-178
अमरेश कुमार : मोक्ष	179-192
सुबोध गुप्ता : घर वापसी	193-214

अमरेश कुमार
मोक्ष

मोक्ष : पीछे छूट चुके संसार का मोह

बिहार के चर्चित मूर्तिकार एवं बनारस हिंदू विश्वविद्यालय में मूर्तिशिल्प के प्राध्यापक अमरेश कुमार की पुनरावलोकन प्रदर्शनी बिहार म्यूजियम में 9 मार्च से 31 मार्च , 2024 तक आयोजित की गई थी। इस पुनरावलोकन प्रदर्शनी का नाम था 'मोक्ष'।

अमरेश कुमार की इस प्रदर्शनी ने पटना के कला जगत में खासी दिलचस्पी पैदा की है। अमूमन मूर्तिशिल्प की प्रदर्शनियाँ कम आयोजित होती हैं। अमरेश कुमार की मुंबई, दिल्ली और पटना में कई एकल प्रदर्शनियाँ आयोजित हो चुकी हैं। उनकी कलाकृतियाँ नई दिल्ली के राष्ट्रीय आधुनिक कला संग्रहालय, ललित कला अकादमी, राज्य ललित कला अकादमी के अलावा बिहार, उत्तरप्रदेश, उड़ीसा सहित कई अन्य शहरों के निजी संग्रहों में संग्रहित हैं। आज अमरेश कुमार भारत के मूर्तिशिल्पियों में खासे पहचाने जाते हैं। इन्होंने अपने बाद की नई पीढ़ी को प्रशिक्षित करने में सहयोग भी दिया है।

बिहार के रहने वाले अमरेश कुमार की प्रारंभिक शिक्षा बोकारो में हुई थी। पटना आर्ट कॉलेज से मूर्तिकला की पढ़ाई कर 1993 में इन्होंने बी.एफ.ए की डिग्री हासिल की। पटना आर्ट कॉलेज के तत्कालीन प्राचार्य और मूर्तिकार पाण्डेय सुरेंद्र ने इनका मार्गदर्शन किया था। तत्पश्चात बनारस हिंदू विश्वविद्यालय से इन्होंने 1996 में एम.एफ.ए की उपाधि प्राप्त की। साथ ही विश्वविद्यालय अनुदान आयोग (यू.जी.सी) से नेट की परीक्षा भी उत्तीर्ण की। अमरेश कुमार ने हरियाणा के कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय से डॉक्टरेट प्राप्त किया। सम्प्रति वे बी.एच.यू के कला संकाय में मूर्तिकला के सहायक प्राध्यापक हैं।

बी.एच.यू से पूर्व अमरेश कुमार ने 12 वर्षों (1997–2009) तक पटना आर्ट कॉलेज में अध्यापन किया। 2009 में इन्हें कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय में मूर्तिकला विभाग की स्थापना के लिए आमंत्रित किया गया था। 2013–2015 के दौरान ललित कला अकादमी और उपेंद्र महारथी संस्थान से भी अमरेश कुमार जुड़े रहे।

पटना आर्ट कॉलेज के दौरान अपने प्रारंभिक प्रभावों के विषय में अमरेश कुमार ने बताया है कि "सृजन के अपने आरंभिक चरण में –दृश्यात्मक सौंदर्य और अलंकरण के प्रति मेरे अंदर कुछ ज्यादा रुझान रहा। इसी दौरान अपने कला महाविद्यालय, जो पटना के विद्यापति मार्ग पर स्थित है, के पास लेडी स्टीफेंसन हॉल में आए दिन आयोजित होने वाले मांगलिक

कार्यक्रमों में आए बैंड वादकों के समूह से प्रभावित होने की शुरुआत हो गई। इन बैंड वादकों के प्रति विशेष आकर्षण का एक अन्य कारण भी था। ज्ञात हो कि महाविद्यालय के सामने की सड़क का इस्तेमाल उन टोलियों द्वारा किया जाता था, जो बांस घाट तक अर्थी लेकर जाते थे। इन सबने मिलकर मुझे बैंड वादकों के समूह को चित्रित करने के लिए प्रेरित किया।"

सुबोध गुप्ता सहित बिहार के कई चर्चित कलाकारों ने पटना आर्ट कॉलेज के दौर के ऐसे ही अनुभवों का जिक्र किया है। पटना आर्ट कॉलेज के मुख्य द्वार के सामने पटना का एक प्रमुख विवाह स्थल 'लेडी स्टीफेंसन हॉल' है। वहीं कॉलेज के द्वार के बगल से गंगा के नजदीक शवों को जलाने के लिए ले जाया जाता है। जीवन और मृत्यु के प्रतीक स्वरूप ये दो दृश्य किसी भी कलाकार के अंदर तीव्र भावनाओं का संचार करने के लिए काफी है।

अमरेश कुमार के बनारस घाट पर केंद्रित कामों में इन भावनाओं की हल्की छाया देखी जा सकती है। पहली नजर में देखने पर अमरेश कुमार के काम में बनारस की छवियाँ नजर आती हैं। बनारस की सीढ़ियां, उनके कामों में, बार–बार आती हैं। सीढ़ी, वैसे भी, बनारस की पहचान मानी जाती है। अमरेश कुमार के काम में मिथक, धर्म, उसके जुड़े प्रतीक, इतिहास, पुराण सभी मिले–जुले ढ़ंग से सामने आते हैं। इसके साथ ही इस पुनरावलोकन प्रदर्शनी में स्त्री प्रश्न को भी अमरेश कुमार ने अपने ढ़ंग से संबोधित करने का प्रयास किया है।

बलुआ पत्थर पर अमरेश कुमार द्वारा किया गया काम प्रदर्शनी का विशेष आकर्षण रहा। यह पत्थर चुनार (बनारस के पास) में बहुतायत में पाया जाता है। बलुआ पत्थर से बनी कई कलाकृतियां उस प्रदर्शनी का हिस्सा थीं। अमरेश कुमार द्वारा बलुआ पत्थर में जो चिकनाई है, संगमरमरी चमक, अबतक कायम है, वह कौतूहल का विषय रहा। पिछले दो दशकों से उनकी कृतियों में की गई पॉलिस की चमक अबतक बरकरार है। ज्ञातव्य हो मौर्य काल (ई.पू. तीन सौ वर्ष) में बनी यक्षिणी की मूर्ति की पॉलिस की चमक आज भी वैसी ही है। विशेषज्ञों के लिए यह रहस्य ही है कि वह क्या चीज है, यक्षिणी की मूर्ति में, जिसने उसकी चमक को आज तक बनाए रखा है ? क्या वह कोई 'वज्रलेप' है या फिर पत्थर के अंदर ही कोई गुण मौजूद है जिसका ज्ञान आज से दो हजार वर्ष पूर्व के लोगों को था ?

अमरेश कुमार के बलुआ पत्थर की पॉलिस देख मौर्य काल की पॉलिस की सहज ही याद आती है। अमरेश कुमार ने अपनी पॉलिस की चमक को जीवन के करीब लाने की कोशिश की है। अमरेश कुमार की इस प्रदर्शनी में कई किस्म के शीर्षकों के तहत कलाकृतियों का संयोजन किया गया है। जैसे गर्भगृह, सप्तमातृका, मेमॉयर, मोक्ष, पदचिह्न, पूर्णिमा, जलकुंड, घाट, मोक्षद्वार, काशीदर्शन, भीष्म पितामह, अर्ध्य, अर्पण आदि। इन शीर्षकों के नामों से ही हमें अमरेश कुमार के कलाबोध का हल्का अहसास होने लगता है।

'मोक्ष' नाम की इस पुनरावलोकन प्रदर्शनी में कई माध्यमों व अनुशासनों में बनी कृतियाँ शामिल थीं; जैसे बलुआ पत्थर, लकड़ी, पेपरमेशी आदि। इंस्टॉलेशन, मूर्ति, चित्र, कोलाज जैसे कई माध्यमों के जरिए उन्होंने खुद को अभिव्यक्त करने का प्रयास किया है। अमरेश कुमार का काम देखते हुए यह अहसास होता है कि उनमें एक ठहराव है, उन्होंने गति से अधिक सघनता पर ध्यान दिया है। इसी कारण ठहरी हुई छवियों पर जोर है। उनकी कृतियाँ शांत, स्थिर, अपने में सिमटी हुई एक ऐसी दुनिया की बात करती हैं जिसका कभी एक अतीत था। उनकी कृतियों में मूर्तिशिल्प की भारतीय परंपरा के स्वभाव और गुण परिलक्षित किए जा सकते हैं।

गर्भगृह श्रृंखला

गर्भगृह–1

इस श्रृंखला के तहत गर्भगृह शीर्षक से पाँच मूर्तिशिल्प थे, जिसमें 'गर्भगृह –1' कलाकृति का एक समूह है। 2024 में निर्मित यह कृति चुनार में पाई जाने वाली बलुआ पत्थर से बनाई गई है जिसका आकार 30 X 36 X 36 इंच है। ये तीनों शिल्प बाहरी तौर पर गोलाकार हैं जो ऊपर और नीचे दो हिस्सों में विभक्त हैं। इन दोनों हिस्सों को एक के ऊपर दूसरा हिस्सा रखकर इसे गर्भगृह का स्वरुप दिया गया है। इस त्रिआयामी मूर्तिशिल्प के आतंरिक हिस्से में कार्विंग करके एक स्पेस बनाया गया है, इससे देखने वाले को चौथे आयाम का अहसास होता है। गर्भगृह का आधा निचला सतह जहाँ रूखड़ा रखा गया है वहीं ऊपरी सतह पर संगमरमरी चमक और चिकनाई पैदा किया गया है।

गर्भगृह–2

'गर्भगृह –2' भी उसी वर्ष (2024) का बना हुआ है। बलुआ पत्थर के लंबवत आयताकार पत्थर के ऊपर अवस्थित गोल आकार के शिल्प के संयोजन से मूर्तिकार ने प्राचीन मंदिर स्थापत्य शैली को प्रस्तुत किया है। आयताकार हिस्सा खुरदुरा है जबकि गोलाकार हिस्से के अधिकांश भाग में चिकनाई है। बीच में सीढ़ीनुमा आकृति बनाकर मंदिर के गर्भगृह से इसे जोड़ने का प्रयास किया गया है। भारतीय उपमहाद्वीप में मंदिर निर्माण की क्रमशः तीन प्रमुख शैलियाँ मानी जाती हैं नागर, द्रविड़ और बेसर। इस रचना में बेसर शैली यानी द्रविड़ और नागर के मिश्रित स्वरुप का प्रभाव देखा जा सकता है।

गर्भगृह – 3

गर्भगृह –3 चुनार के बलुआ पत्थर से 44 X 22 X 22 इंच की उसी वर्ष निर्मित है। इसमें गर्भगृह को लंबे व आयताकार पत्थर के ऊपर अवस्थित किया गया है। गर्भगृह शृंखला की दूसरी मूर्तियों के बनिस्पत यह थोड़ी ऊंचाई पर खड़ा है। ऊपरी हिस्से वाले बलुआ पत्थर पर वही चमकदार पॉलिश है जो अमरेश कुमार के मूर्तिशिल्पों की खास पहचान बन चुकी है। ऊपरी हिस्से वाले पत्थर को अन्दर से उत्कीर्ण कर केंद्र में दीपक की लौ को गढ़ा गया है। सामने वाला हिस्सा किसी मंदिर के प्रवेश द्वार सरीखा बनाया गया है।

गर्भगृह–4

अमरेश कुमार के गर्भगृह शृंखला में यह मूर्तिशिल्प सबसे पुराना है। 2001 में चुनार के बलुआ पत्थर से बनी है, इसका आकार 24 X 24 X 24 इंच है। इस कृति से पता चलता है कि गर्भगृह की छवि के प्रति अमरेश कुमार का आकर्षण लगभग दो ढाई दशक पुराना है। भले कई काम इधर जाकर उन्होंने किया हो। इस हल्की ऊँचाई वाले त्रिभुजाकार पेडस्टल पर गोलाकार गर्भगृह रखा जाता है। यह ऊपर से भी खुला रखा गया है। भारतीय मंदिरों के प्रवेश करने के सीढ़ियों वाले द्वार को यहाँ भी उत्कीर्ण किया गया है।

गर्भगृह– 5

उसी पत्थर से बनी इस मूर्तिशिल्प की रचना में लम्बवत काष्ठ के ऊपर गोले को इन्टरलॉक कर संतुलित किया गया है। 65 X 38 X 38 आकार के इस मूर्तिशिल्प का टेक्सचर और कलर थोड़ा अलग ढंग का है, भले सामग्री चुनार का बलुआ पत्थर है। इसमें मंदिर के द्वार के बदले थोड़ा भिन्न आकार अपनाया गया है। गोलाकार पत्थर के बीचोबीच कार्विंग करके उसे आर–पार देखने लायक बना दिया है। गर्भगृह–5 इस शृंखला की बाकी मूर्तियों से इस मायने में अलग है कि यह दोनों ओर से खुला है और देखा जा सकता है।

गोलाकार हिस्से में अल्युमूनियम के छोटे–छोटे टुकड़ों को चिपकाया गया है और उसकी सतह को रूखड़ा रखा गया है। एक साथ अल्युमूनियम की चमक और सतह का खुरदुरापन मिलकर विशेष किस्म का दृश्य–प्रभाव रचकर दर्शक को विशेष चाक्षुष अनुभूति प्रदान करता है।

मेमॉयर

'मेमॉयर' शीर्षक मूर्तिशिल्प दर्शकों के मन में सबसे अधिक कौतूहल जगाने वाली कृति रही। दर्शक गौर से इसे देखते और समझने का प्रयास करते। इस मूर्तिशिल्प में एक दीवान (पलंग) का निर्माण किया गया है। इसके ऊपरी हिस्से यानी बिस्तर पर संगमरमर का पत्थर लगाया गया है। जिसके बीच वाले हिस्से पर छोटे साइज की एक आयताकारनुमा स्पेस निर्मित है जिसके ऊपर चामर ग्राहिणी यक्षी की प्रतिमा को विशेष यंत्र से संचालित कर कुछ इस प्रकार लगाया गया है कि वह एक लय में नीचे–ऊपर होती रहती है। दर्शकों में सर्वाधिक उत्सुकता इसी हिस्से के कारण रही।

बिस्तर के बाकी हिस्से में संगमरमर के प्लेट पर दर्जनों चाबियों को चिपकाया गया है। ये चाबियाँ बिस्तर के चादर की डिजाईन का हिस्सा हैं। 'मेमॉयर' में लकड़ी, संगमरमर, धातु, यंत्र और यक्षिणी की लघु आकृति का उपयोग किया गया। यह कृति यक्षी की प्रतिमा के बहाने

कुछ नया कहने का प्रयास किया गया है। 'मेमॉयर' का आकार पलंगनुमा है यानी 34 x 72 x 36 इंच का। इसके निर्माण का वर्ष भी 2024 ही है।

अमरेश कुमार 'गर्भगृह–2' में, जिस बात को अभिव्यक्त करने में थोड़े अस्पष्ट नजर आते हैं वह अगली श्रृंखला 'सप्तमातृका' में खुल कर प्रकट हो जाता है।

सप्तमातृका

"सप्तमातृका' सात श्रृंगारदान (ड्रेसिंगटेबल) का एक समूह है। महिलाओं के जीवन से अभिन्न रूप से जुड़े 'श्रृंगारदान' को माध्यम बनाकर अमरेश कुमार ने स्त्रियों को उनकी पुरानी दुनिया से निकाल कर थोड़ा समकालीन संदर्भ प्रदान करने की कोशिश की है। सात श्रृंगारदान बनाने के लिए मोल्ड–कास्ट, फेब्रिकेशन, कार्विंग और रिपोजी (ठोक–पीटकर) तथा अन्य पद्धति को अपनाया गया है। अपनाये गए सात माध्यम है– पेपरमेशी, टेराकोटा, आयरन (लोहा), ब्रास (पीतल), व्हाईट सीमेंट, रेक्सीन, गद्दा और पत्थर।

एक श्रृंगारदान के पीछे अगल–बगल की दीवाल को चर्चित स्त्री लेखिकाओं की पुस्तकों के कोलाज से सजाया गया है। आईने वाले हिस्से में पुस्तकों को सजाया गया है। हिंदी में स्त्री विमर्श की इन प्रमुख कृतियों ने सातों श्रृंगारदान को नया अर्थ यह प्रदान किया है कि घर के अंदर की स्त्रियां सिर्फ श्रृंगार तक सिमटी हुई नहीं है अपितु इन पुस्तकों के मार्फत अपने वजूद का नया अर्थ तलाश करने की कोशिश कर रही हैं। वैसे इस कृति के अर्थ और शीर्षक में एक विसंगति दिख पड़ सकती है। यहाँ अमरेश कुमार ने समकालीन परिघटना को अभिव्यक्त करने के लिए पौराणिक मिथक का शीर्षक रखा है।

भीष्म पितामह

नौ फुट लम्बी पुरानी जर्जर पेड़ की लकड़ी को मोल्ड– कास्ट करने के बाद उसके ऊपर ताम्बे

की चादर जड़ी गयी है। इसके ऊपर सतह को भेदती हुयी मिसाइलनुमा आकृतियाँ पैबस्त की गयी हैं। इस मूर्तिशिल्प के लिए महाभारत में वर्णित भीष्म पितामह के शर–शैय्या वाले रूपक को समकालीन सन्दर्भ दिया गया है। जिसके पीछे निरंतर चल रहे युद्धों में प्रयुक्त होनेवाले मिसाईलों की वजह से धरती और उस पर मौजूद सम्पूर्ण जन–जीवन के अस्तित्व पर आये संकट को लेकर आगाह किया गया है। प्रयुक्त मुख्य आकृति मिसाइलनुमा तीन नुकीले आधार पर टिकी है। इस कृति में पौराणिक कहानी का उपयोग आज की दुनिया के एक बड़े संकट को अभिव्यक्त करने के लिए किया गया है। अमरेश कुमार ने 'सप्तमातृका' श्रृंखला में भी ऐसा ही किया है।

काशीदर्शन

'काशीदर्शन' में अमरेश कुमार ने लकड़ी और धातू का उपयोग कर 48 X 108 X 08 इंच की कृति को निर्मित किया है। 2024 में बनी यह कृति मध्यमवर्गीय परिवार द्वारा इस ऐतिहासिक नगरी को मोटरकार से घूमे जाने की छवि को पकड़ने की कोशिश की है। इस पुनरावलोकन प्रदर्शनी में यह कृति दर्शकों को ठहर कर देखने को विवश करती है।

मोटर कार को सामने के बदले उस एंगल से देखा गया है जिधर से कार का दरवाजा होता है। मोटर कार के दरवाजों की चार आकृतियों को मूर्तिशिल्प के चारों तरफ संयोजित किया गया है। इन दरवाजों के ऊपरी हिस्से को स्टेनलेस स्टील की चादरों से मढ़ा गया है, जिससे देखने वाले को काशी के घाटों के किनारे बहते हुए जल की याद हो आती है। वहीं इन चार दरवाजों के बीच के हिस्से में घाट की सीढ़ियाँ हैं। यही सीढ़ियाँ काशी की पहचान हैं। इस कृति को देखने में एक दूरी का अहसास बना रहता है। ऐसा प्रतीत होता है कि एक मध्यमवर्गीय परिवार मोटर कार में (काशी घूमने वाला) चला जा रहा है। कला कैसे एक जाने पहचाने बिंब का, अपनी सामग्रियों की मदद से, आत्मगत रूपांतरण करती है, इसका उदाहरण है 'काशी दर्शन'।

घाट

93 X 90 X 135 इंच के त्रिआयामी आकार में लकड़ी, तांबे की चादर, लोहा और फाइबर से बनी कृति है 'घाट'। शीर्षक से जाहिर है बनारस के 'घाट' को अपने नजरिए से देखने का प्रयास किया गया है। इसे भी इसी वर्ष (2024) बनाया गया है। कलाकृति मुख्यतया दो हिस्से

में बंटी नजर आती है। बनारस की घाटों पर सर्वत्र दिखाई पड़ने वाली छतरी को मोल्ड–कास्ट कर गोलाकार रखा गया है। ये छतरियाँ अमूमन बांस की बनी होती हैं। छतरी को ऊपर से तांबे की चादर का आवरण इस प्रकार प्रदान किया गया है कि छतरी के बांस का टेक्सचर साफ–साफ दिखे। बांस के साथ तांबे का उपयोग इसे धार्मिक और पौराणिक संकेत प्रदान करता है। छतरी को लम्बवत स्टैंड के सहारे खड़ा किया गया है। छतरी के सामने के हिस्से की सीढ़ीनुमा दो आकृतियों को डायग्नल रखकर कोण बनाते हुए संयोजित किया गया है। कोण की दोनों भुजाएं जहाँ मिलती हैं वहाँ संकरी गली को दर्शाया गया है।

'घाट' देखते हुए प्रेक्षक को यह प्रतीत हो सकता है कि सीढ़ियाँ अंततः घाट पर जाकर छतरियों तक पहुँचना चाहती हैं। यह मूर्तिशिल्प अमरेश कुमार ने इस प्रकार बनाया है कि एक गति का सा अहसास होता रहे। सीढ़ियों को ऊपर उठते हुए देखने से भी गति का प्रभाव पैदा होता है। कुछ ऐसा मानो कोई व्यक्ति सीढ़ियाँ चढ़ते हुए घाट के किनारे की बनी छतरी में कोई धार्मिक कृत्य संपन्न करने की ओर अग्रसर हो।

जलकुण्ड

'जलकुंड' अमरेश कुमार का दो दशक पुराना काम है। दो वर्तुलाकार पत्थर को संयोजित कर उसके अन्दर कुण्ड को इस तरह से उत्कीर्ण किया गया है कि दर्शक की नजरें सीढ़ियों से होते हुए कुण्ड तक स्वभाविक रूप से जा सके। इसका आकार 15 X 15 X 25 इंच है। इस काम को उनकी परवर्ती कृतियों से मिलाकर देखने पर एक फर्क समझ में आता है। बाद के कामों में अधिक स्पर्श संवेदना दिखती है।

पदचिन्ह

''पदचिह्न' नौ वर्तुलाकार आधारों का एक ऐसा समूह है जिसे आयताकार स्पेस में समान दूरी पर रखा गया है। इसकी बीच वाली संरचना के आलावा बाकी अन्य के ऊपर गोलाकार प्रस्तर शिल्प संयोजित हैं। प्रत्येक पत्थर का कुछ हिस्सा जहाँ विशेष चमक वाला है, वहीं सभी में सीढ़ीनुमा

संरचना है। यह रचना भी 2003 की है और सबों का आकार 13 X 95 X 95 इंच का है। इसे भी बाकी मूर्तिशिल्पों की तरह चुनार के बलुआ पत्थर से बनाया गया है। नौ कलाकृतियों के समूह के माध्यम से अमरेश कुमार ने पुरखों के प्राचीन पैरों के निशान की खोज को अपना विषय बनाया है। पुरखों के विस्मृत चिह्न के अंदर पुरातात्विक धरोहरों को देखने का सा अहसास कराते हैं।

पूर्णिमा

2024 में लकड़ी और बलुआ पत्थर से निर्मित 'पूर्णिमा' का आकार 68 X 36 X 12 है। लकड़ी के लंबे फ्रेम में पत्थर से बनी घाटनुमा आकृति तीन अलग–अलग हिस्सों में पैबस्त की हुई है। तीनों हिस्से एक दूसरे के ऊपर उर्ध्वाकार रखे गए हैं। बीच वाले भाग में लगायी गयी धातु की गोल आकृति चन्द्रमा को इंगित करती है। वहीं पत्थरों की संरचना से चन्द्रमा की रौशनी में झिलमिलाती गंगा की लहरों का आभास देखने वाले को होता है। इस आकृति में भी बनारस के उनके अनुभव प्रकट हुए हैं। लकड़ी और पत्थर के टेक्सचर के साथ चंद्रमा को रखकर अमरेश कुमार ने दर्शकों की कल्पना को हल्का कुरेदा है।

मोक्षद्वार

प्रदर्शनी में दर्शकों का सर्वाधिक ध्यान आकृष्ट करने वाली कृति थी 'मोक्षद्वार'। उसे पत्थर और लकड़ी की सहायता से बनाया गया है। काष्ठ से निर्मित दरवाजे की चौखट के ऊपरी हिस्से को पादुकाओं से आच्छादित किया गया है। इन पादुकाओं के तल्ले पर बनारसी साड़ी के कपड़ों को चिपकाया गया है। बनारस का हिंदू धर्म और मिथक में विशेष स्थान रहा है। मरने पर मोक्ष प्राप्ति हेतु बनारस की इच्छा सदियों पुरानी है। 'मोक्षद्वार' इसी आध्यात्मिक आकांक्षा को अभिव्यक्त करता प्रतीत होता है। अपनी दुनियावी वस्तुओं को, जिसे पादुका से संकेतित किया गया है, दरवाजे पर छोड़कर मोक्ष प्राप्ति के लिए अंदर प्रवेश कर जाना है। यह कृति निवृत्ति की भावना पर बल देती है, जिसके अनुसार इस जगत के सरोकारों के बदले किसी और दुनिया की चिंता में लगे रहने वालों को प्राथमिकता दी जाती है। रंगीन पादुकाएं दुनिया की रंगीनियों को प्रकट करती हैं जिसका त्याग करना मोक्ष का ध्येय माना जाता है; यानी मोक्षद्वार वह है, जहाँ आप अपनी रंगीन दुनिया को पीछे छोड़ आगे बढ़ते हैं।

नॉस्टैल्जिया

अमरेश कुमार की इस प्रदर्शनी में 'नॉस्टैल्जिया' उनके द्वारा निर्मित सबसे पुरानी कृति है। 1995 में काष्ठ और बलुआ पत्थर से बने नॉस्टैल्जिया का साइज 77 X 142 X 142 इंच है। पत्थरों के समूह से निर्मित अलग–अलग आकृतियाँ ग्रामीण जीवन के उस दौर की याद दिलाती हैं जब घर मिट्टी से बना करते थे। गाँव के सामूहिक जीवन को, पेड़–पौधों से भरे माहौल को, दर्शाने के लिए एक लकड़ी के पेड़ का उपयोग किया गया है।

'नॉस्टैल्जिया' यह बताती है कि गाँव की दुनिया अब महज स्मृति में वास करती है। गाँवों का संसार अब काफी बदल चुका है। इस परिघटना को अमरेश कुमार ने आज से लगभग तीन दशक पहले ही पकड़ लिया था; तब शायद थोड़ा बहुत ग्राम्य जीवन बचा भी था। अमरेश कुमार ने उस प्रक्रिया को इस कृति में उतारा है जिसमें मिट्टी वाले घर अब सिर्फ हमारी यादों में हैं। सभी अलग–अलग कृतियों का संयोजन अर्द्धचंद्राकार ढंग से इस प्रकार किया गया है जिससे एक सामाजिक जीवन का अहसास देखने वाले को हो सके।

अर्ध्य

धातु और बलुआ पत्थर से 2007 में बनी 'अर्घ्य' नामक कृति लोटे के आकार वाली है। लोटा को इस तरह रखा गया है मानो अर्घ्य प्रदान किया जा रहा हो। इस कलाकृति का आकार है 64 X 38 X 38। अर्घ्य प्रदान करते हुए इसे आयताकार पत्थर पर संयोजित किया गया है। पत्थर का रंग मानो जल का अहसास कराता प्रतीत होता है। लोटे के अंदर नदी के प्रवाह को अवस्थित करने की कोशिश की गई है। लोटे के अन्दर से बनारस की सीढ़ीनुमा घाट की छवि दर्शाई गई है। कांस्य से निर्मित लोटा हमारी सभ्यता के शुरुआती दौर का प्रतिनिधित्व करता है। वहीं अल्युमीनियम के माध्यम से जल की जिस तरलता को व्यक्त किया गया है, वह हमारी त्रवाहमान परंपरा को अभिव्यक्त करती है। नदियों से आच्छादित भारत की विरासत में लोटा, जल और अपने आराध्य को जल देने की परिपाटी बेहद पुरानी रही है। अमरेश कुमार ने इस अवधारणा को इस कृति में आकार देने की कोशिश की है। बहता जल मूर्तिकार को खास तौर पर आकृष्ट करता है।

अर्पण

'अर्पण' 2015 में विभिन्न आकार के बने एक खास पकवान को पेपरमेशी में बनाया गया है। पूर्वांचल क्षेत्र में प्रचलित इस पकवान को ठेकुआ या टिकरी कहा जाता है। प्रदर्शनी में पेपरमैसी से बना यह एकमात्र काम है।

पूर्वांचल में छठ व्रत के मौके पर यह लगभग सभी घरों में बड़े शौक से बनाया जाता है। कई जगह बेटी की विदाई के समय भी इसे भेजने की परिपाटी है। इसे आटा, गुड़ या चीनी के मेल से बनाया जाता है।

ढेर सारे ठेकुआ (टिकरी) से बने इस संयोजन में अमरेश कुमार ने एक बड़े आकार के ठेकुआ को केंद्र में रखकर उसके इर्द–गिर्द छोटे–छोटे साइज वाले टिकरी को संयोजित किया है। छोटे–बड़े आकारों वाले ठेकुआ को धागे के सहारे लटकाया गया है। कत्थई रंग के ठेकुआ

से बना यह पूरा दृश्य संयोजन एक विशेष चाक्षुष प्रभाव छोड़ता है। बिहार और पूर्वी प्रदेश से जुड़ा यह पकवान वैसे तो सभी वर्गों में पसंद किया जाने वाला मल्टी क्लास डिश है जो बिहार के खाने–पीने की सांस्कृतिक पहचान से भी जुड़ गया है।

प्रदर्शनी की अधिकतर कृतियाँ इसी वर्ष (2024) की बनायी गयी प्रतीत होती हैं। ऐसा प्रतीत होता है कि प्रदर्शनी की घोषणा के बाद कलाकार ने तैयारी शुरू की है। कुछ काम अवश्य थोड़े पुराने हैं पर सन् 2000 के पूर्व का बहुत कम काम इस प्रदर्शनी का हिस्सा है। एक दो को छोड़कर पहले के काम लगभग नहीं के बराबर हैं। जो कुछ पुराने काम हैं भी, उनमें ज्यादातर 'गर्भगृह' श्रृंखला के हैं। इस शीर्षक से 2024 में बनी उनकी कृतियों में उनके पुराने कार्यों का ही विस्तार दिखता है।

अमरेश कुमार का जो सृजन संसार है उसमें आधुनिक छवियाँ थोड़ी कम हैं या कहें लगभग नहीं के बराबर हैं। ग्रामीण जीवन, उसके सरोकार, उसकी संस्कृति, उसके छूटते चले जाने का मोह उनके यहाँ छाया हुआ है। जो व्यतीत हो चुकी दुनिया है वह नॉस्टेलजिया बन कर मूर्तिकार को हांट करता सा प्रतीत होता है।

वरिष्ठ मूर्तिकार नागजी पटेल ने कहीं पर कहा है कि हमलोगों के वक्त में छवियाँ बहुत कम मौजूद थीं। इमेजेज का सीमित संसार था। जबकि आज एक कलाकार के समक्ष विविध और व्यापक छवियाँ हैं। अमरेश कुमार बहुत कम छवियों से काम चलाते हैं। अर्बन लाइफ उनके यहाँ लगभग एक सिरे से गायब हैं। अर्बन की आपाधापी में रूरल की स्मृति उन्हें परेशान करती है। बार–बार, हर बनाई छवि में वह धीरे से चली आती है।

अमरेश कुमार का पत्थर में स्पर्शबोध बेहद उन्नत है। इससे वे संवेदना जगाते प्रतीत होते हैं। साथ ही पत्थर के अंदर स्पेस के बढ़िया सेंस का अंदाजा 'गर्भगृह' में उनके प्रयोगों से देखा जा सकता है। पत्थर के स्वभाव को, उसके अंदर की कोमलता, उसकी कठोरता को अमरेश कुमार बखूबी समझते हैं। साथ ही उसके अंदर से अपनी मनचाही मूर्ति को निकाल लेने की जो तकनीकी दक्षता है वह प्रेक्षक को कायल बनाती हैं। हाँ, विषयवस्तु के स्तर पर एक प्रेक्षक को बहुत विविधता नहीं मिल पाती। बोकारो से लेकर बनारस तक की उनकी यात्रा और उनके अनुभव उनकी रचना प्रक्रिया का अभिन्न हिस्सा है। उनकी प्रदर्शनी से गुजरते हुए प्रेक्षक को ऐसा महसूस होता है कि वह अपने पीछे छूट चुके संसार में फिर से विचरण करना चाहते हैं।